

न्धविशेषापक्षया प्रथमसाहसं * दण्डं प्राप्नुयात् ॥ (C.)

— v. 1, b. चरेद्वै मूल्यतो éd. Calc. éd. Lond. ms. beng.

— कारयेन्मूल्यतो ms. dévan.

Sl. 289, v. 1, a. राजगृहपुरादिसम्बन्धिनः प्राकारस्य
भेदकं ॥ (Coulloûca.)

Sl. 291. अवीजं वीजं प्ररोहसमर्थं व्रीह्यादि प्ररोह-
समर्थमिति कृत्वा यो विक्रीणीति तथातिशयमेव कति-
चिदुत्कृष्टप्रक्षेपेण सर्वमिदं सोत्कर्षमिति कृत्वा यो
विक्रीणीति ॥ (Coulloûca.) — v. 1, b. वीजोत्कृष्टं éd.
Calc. éd. Lond. — वीजोत्कृष्टस् ms. dévan.

Sl. 294, v. 2, b. सप्ताङ्गं éd. Calc. éd. Lond. N° II. —
समस्तं ms. de M. Wilkins, ms. de Bombay, ms. bengali. —
समग्रं ms. dévanâgari.

Sl. 295, v. 2. पूर्वस्याः पूर्वस्या विनाशविषये गरी-
यो व्यसनं जानीयात् ॥ (Coulloûca.)

Sl. 296, v. 1, b. अत्र प्रसिद्धं यतित्रिदण्डमेव दृष्टान्तः

* Il faut probablement ajouter ici : *madhyamam vâ.*